International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 31-32

भारत में महिला उद्यमियों की दोहरी भूमिका का अध्ययन

डॉ0 अनिता कुर्रे
S.G. College of Agriculture and Research Station, Kumarawand, Chhattisgarh, India

प्रस्तावना

महिलाओं का पुरूषों के समकक्ष सफलता प्राप्त करना एक आश्चर्य वाली बात नहीं है, ये उनके द्वारा प्रारम्भ से किये गये कठोर परिश्रम का फल है, आज भी महिलाएं दोहरी भूमिका निभाते हुए सफलता का परचम लहरा रही है। प्राचीनकाल से लेकर स्वतंतत्रता के पचास वर्ष पुर्व तक महिलाओं की स्थिति में पुर्ण रूपेण सुधार नहीं हुआ। स्वतंत्रता के बाद हमारे देश में महिलाओं की स्थिति मे थोड़ा सुआर हुआ, आज महिलाएं मजदूरी से लेकर शिक्षक, डॉक्टर, नर्स, पुलिस, आर्मी, एयर होस्टेज, इंजीनियर, वैज्ञानिक सभी पदों पर आसिन होकर परिवार, समाज व देश का सम्मान बढ़ाने के साथ आर्थिक विकास में मदद कर रही है। आज महिलाएं परिवार समाज व कार्यस्थल के समस्याओं का सामना करते हुये अपनी जिम्मेदारियों का नर्वाह कर अपनी दोहरी भूमिका (परिवार व कार्यस्थल के प्रति उत्तरदायित्व) का प्रमाण प्रस्तुत कर रहीं है। महिलाओं द्वारा दोहरी भूमिका का निर्वाहन करना आज शोध का अति आवश्यक रूचिपुर्ण व समाज हित विषय है, महिलाओं की हिम्मत, दृढ़ता, परिश्रम पुरूषों से कम नहीं है।

हैदराबाद में ग्लोबल आंतप्रन्योरशिप समिट हाल ही में सम्पन्न हुआ। सुर्खियों में रहा महिला उद्यमियों का मुद्दा। हमारे देश में सदा से महिलाओं ने उद्यमिता के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। बदलते समय के साथ महिला उद्यमियों की भूमिका भी बढ़ रही हैं। स्टार्ट अप के साथ महिलाएं अब परंपरागत उद्योगों से आगे अपने लिए मुकाम खोज रहीं हैं। सरकारी योजनाओं के साथ साथ समाज का नजरिया भी व्यापक हो रहा है। मूल मंत्र ये है कि लगन और परिश्रम से उद्यम हो तो महिलाएं संक्षम हो रही हैं। ये सही है कि अभी और भी बहुत किया जाना शेष है लेकिन आगाज बेहतर है तो आशा जगती है कि अंजाम भी बेहतर होगा।

उद्यमिता के लिए आत्मविश्वास के साथ–साथ जोखिम उठाने और पूंजी की भी आवश्यकता होता है। हमारे समाज की मानसिकता ऐसी है कि वह लड़कों के लिए तो जोखिम उठाने और पूंजी लगाने को तैयार हो जाते है पर लड़कियों के मामले में नजरिया बदल जाता है। उन्हें लगता है कि बजाए विवाह करके अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर लेना चाहिए। अभी जो महिलाएं उद्यमी बन रही है उनमें से ज्यादातर संपन्न परिवारों से आने वाली कुछ महिलाएं ही उद्यमी बन पा रही हैं। समाज में यह मानसिकता विकसित करनी होगी कि लड़किया भी अच्छी उद्यमी बन सकती हैं और उनके लिए भी जोखिम उठाकर पूंजी का निवेश किया जा सकता है। महिला उद्यमिता को बढ़वा देने के लिए सरकार और समाज को सार्थक प्रयास करने होंगे। बैंको से व्यापार के लिए दिए जाने वाले ऋण का एक निश्चित हिस्सा महिलाओं को मिले, इसे सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

महिलाएं चाहे विवाहित हो या अविवाहित हो, सभी को अपने घरों में अपनी जिम्मेदारी निभानी होती है, उसके बाद भी उद्यमी के रूप में अपने आप को सिद्ध कर रही हैं। देश के विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है साथ साथ विवाहित होकर अपने घरों की जिम्मेदारियों को भी निभा रही है। यह दोहरी जिन्दगी किसी भी महिला के लिए आसान नहीं होती।

डॉ नीरंजना, ने "स्टेटस ऑफ बुमेन एंड फैमिली वेलफेयर" (2000) संबंधित अपने अध्ययन में महिलाओं की सामाजिक व परिवारिक स्थिति को आर्थिक स्थिति कैसे प्रभावित करती है का अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि जिस महिला की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है वे अपने परिवार व समाज में भी अहम भूमिका निभाती है तथा आर्थिक रूप से स्थितियों के अनुसार कार्यो का संचालन करने में निपुर्ण होती है।

साहू और अल्का, (2001) के द्वारा "दिल्ली पुलिस में पदस्थ महिला पुलिस बल का अध्ययन" किया गया है जिसमें पाया गया है कि महिला पुलिस और पुरूष पुलिस में लिंग भेद–भाव अधिक किया जाता है अतः महिला पुलिस की स्थिति संतोषजनक नहीं होती तथा महिला पुलिस अपने मूल स्वरूप को खोती जा रही है अर्थात उनमें महिला के गुणों का ह्यस होना सामने आया है जैसे – नम्रता संवेदना की कमी पाया गया।

संगीता एवं साहू, (2003) "दक्षता एव मनोवैज्ञानिक दक्षता का अध्ययन" इसमें कार्यकाजी महिला एवं गैर कार्यकाजी महिलाओं के मध्य "दक्षता एवं मनोवैज्ञानिक दक्षता का अध्ययन किया गया जिसमें कार्यकाजी महिलाओं में गैर कार्यकाजी महिलाओं के अपेक्षा स्वयं की कार्यदक्षता एव मनोवैज्ञानिक दक्षता का स्तर उच्च होना पाया गया अर्थात कार्यकाजी महिला कार्यक्षेत्र के साथ साथ अपने परिवार व समाज के कार्यो को भी करने में अधिक दक्ष रहे।

भारत में उद्यमिता के क्षेत्र में सफल महिलाएं जो कि निम्न है

1). इंदिरा नूरी – दुनिया के सबसे बड़े ब्रांडों में से एक पेप्सिको की मुख्य कार्यकारी अधिकारी है। उन्हे दुनिया की शक्तिशाली महिलाओं में शुमार किया जाता है। वर्ष 2007 में प्रतिष्ठित पदम भूषण सम्मान भी प्रदान किया गया।

2). चंदा कोचर – भारत के सबसे बड़े गैरसरकारी बैंक (आईसीआईसीआई बैंक) की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) और प्रबंध निदेशक (एमडी) हैं। वे देश की प्रमुख महिला उद्यमियों में है।

3). नैना लाल – हांगकांग एंड शंघाई बैंक (एचएसबीसी) की भारत शाखा की कंट्री हैड और ग्रुप की जनरल मैनेजर है। वे भारत में किसी विदेशी बैंक के प्रमुख पद हासिल करने वाली पहली महिला हैं।

4). किरण शॉ – 1978 में बायोकॉन कंपनी शुरू की और उस बायोमेडिसिन रिसर्च का अगुआ बना दिया। जैव–प्रौद्योगिकी क्षेत्र को नया रूप देने में महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। वे पदम भूषण से भी सम्मानित किया गया।

5). महविश – कश्मीर से मोबाइल फोन में एंड्रॉयड एप्लीकेशन बनाने वाली पहली कश्मीरी महिला। इससे कई लोग लाभान्वित हो रहे हैं।
6). पबीबेन – गुजरात से आदिवासी रेबारी कशीदाकारी को नई पहचान दी है। 60 से अधिक महिलाएं जुड़ी हुई हैं।
7). सोबिता –असम से असमिया टोपी (जापी) बनाने को नया आयाम दिया। कई महिलाएं जुडी है।
8). थिनलस – लददाख से 2009 में लद्दाखी वूमेंस ट्रेवल कंपनी का गठन किया। 30 से ज्यादा महिलाएं कार्यरत है।

ऐसे ही और कई महिला उद्यमी है जो अपना नाम भारत के इतिहास में दर्ज करवा चुकी है जिनमे हेमलता ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में, छाया फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में, लक्ष्मी रिसाइकलिंग के क्षेत्र में, नेहा अरोड़ा टैवल ऑपरेटर के क्षेत्र में आदि।

भारत में महिलाओं की उद्यमों में भागीदारी

54 देशों में मास्टरकार्ड इंडेक्स ऑफ वुमन आंत्रप्रन्योर (महिला उद्यमी) का सर्वे किया गया जिसमे भारत 41.7 अंको के साथ इस सूची में 49 वें स्थान पर है।
इसमें 12 मापदंडों और 25 उपमापदंडों को सर्वे में शामिल किया गया था।
78.6 वैश्विक महिला श्रम शक्ति को सर्वे में शामिल किया गया था।

- 1.34 करोड़ लोगों को देश में रोजगार महिला उद्यमियों द्वारा संचालित उद्यमों से मिला।
- 80.5 लाख महिला उद्यमी हैं देश में कुल 5.85 करोड उद्यमियों में से।
- 31.6 प्रतिशत महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी कृषि क्षेत्र के अंतर्गत पशुपालन में है।

देश के लिए गर्व की बात है कि महिलाएं देश के विकास में शत प्रतिशत योगदान दे रही है, जबकि महिला होने के नाते इनको कई समस्याओं का सामना करना होता है। समस्या घर से प्रारम्भ होकर कार्यस्थल तक कांटों की तरह बिछा हुआ होता है। घर के कार्यो, समस्याओं का समाधान करना फिर कार्यस्थल के कार्यो व समस्याओं का समाधान करना ये आसान कार्य नहीं होता। कोई भी महिला हो, चाहे मजदूर हो, शासकीय कर्मचारी हो या उद्यमी हो सभी को अपने स्तर पर दोहरी जिम्मेदारियों को निभानी होती है। उसके बाद भी कड़ी मेहनत व लगन से महिलाएं सक्षम होकर सफलता की परचम लहरा रही है।
उद्यमियों की जिम्मेदारियों को अपने कंधे पर लेने वाली महिलाओं की संख्या पिछले कुछ वर्षो में बढी है। वैसे इनकी संख्या में धीरे–धीरे वृद्वि होने के बावजूद भारत में महिला उद्यमिता को अभी काफी लंबा रास्ता तय करना है। आवश्यकता है अधिक से अधिक महिलाओं को नया उद्यम आरंभ करने एवं संचालन कर सकने संबंधी उनकी क्षमताओं के प्रति उन्हें पूरी तरह आश्वस्त करने की। एक अध्ययन के अनुसार भारत में वर्ष 2020 तक महिला उद्यमियों की संख्या में 20 फीसदी तक की वुद्वि की संभावना है। सरकारी कार्यक्रम इसमें सहायक साबित होंगे। साथ ही बैंकों द्वारा भी ऋण प्रोत्साहन मिलने से स्थिति और बेहतर होगी।

संदर्भ

1. देसाई मीरा, वूमेन इन माडर्न इंडिया कंपनी पं. ला. लि. मुम्बई, 1957.
2. अली अेगतरे, वूमेन ऑफ इंडिया, चॉद कार्पो,प्रा. लि. न्यू दिल्ली, 1958.
3. सत्य दूबे मिश्रा, मनु की समाज व्यवस्था, किताब महल, प्रथम संस्करण, कलकत्ता, 1964.
4. कपूर प्रमिला, भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएं, राजमहल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975.
5. खन्ना गिरजा, इंडिया वूमेन, टूटे विकास पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 1978.
6. भूषण केयर, छत्तीसगढ के नारी रत्न, जन चेतना प्रकाशन, सुंदर नगर, रायपुर, 2002. 2007.
7. गुप्ता सुभाषचंद्र, कार्यशील महिलाएं एवं भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009
8. पत्रिका भारत 3 दिसम्बर 2017.
9. हैदराबाद ग्लोबल महिला उद्यमी समिट 2017.